

# न्यूज पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया

NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA

Volume XXV

वर्ष 25

No. 04

Delhi

March, 2019

Rs. 5/-per copy

Pages : 08



## 7th Global Festival of Journalism Propagated Positive Journalism

Noida: The first ever festivals of Journalism of Asia and second in the World created a wonderful opportunity for journalists from all over India and abroad a powerful cultural exchange.

International Journalism Centre and International Chamber of Media And Entertainment Industry in association with AAFT- Asian Academy of Film And Television jointly presented the 7th edition of Global Festival of Journalism Noida 2019 at Marwah Studios at Noida Film City.

"It was exactly eight years back we announced 12th February as the International Day of Journalism under International Journalism Centre. To Mark respect to our own decision we started first ever festival of journalism on the fixed dates of 12th, 13th and 14th of February. We feel elevated now, when hundreds of organizations all over the World have started celebrating this particular day," said Sandeep Marwah President of the festival.

"We are amazed to see the quality and quantity of the program. Never ever attended a festival of journalism before though I have in journalism for many years before joining Foreign Service," said H.E. Muhamed Cengic Ambassador of Bosnia and Herzegovina.

"I am thrilled to carry from



here a scholarship of AAFT for the student from Azerbaijan, the festival has won the heart of Azerbaijan," added H.E. Ashraf Shikhaliyev Ambassador of Azerbaijan to India while receiving the scholarship from Marwah.

"The participation of Czech Republic in Global Festival of Journalism has enhanced our relationship with India. Indo Czech Cultural Forum is doing well and creating awareness about our activities all over India and abroad," said Roman Masarik Deputy Head of the Mission Embassy of Czech Republic.

The cultural diplomacy is the most remarkable in building relations. I am happy to be here and would like to join hands with ICMEI for more activities," expressed P. Murugaesh Counsellor of High Commission of Republic of Singapore.

K.G.Suresh Director General of Indian Institute of Mass Communication, Neeraj Thakur Press Council of India Sakshi Joshi of News 24 were the special guest at the inauguration function.

Earlier an exhibition of still photography designed by students of Asian School of Media And Studies was inaugurated by the dignities. A scholarship of short term course AAFT was also presented to Ambassador of Azerbaijan.

**Later Dr. Sandeep Marwah honored all the dignities with the life membership of International Journalism Centre of ICMEI.**

AAFT Scholarship Presented to Azerbaijan at 7th GFJN

An Indian film institute AAFT presented scholarship of a short-term course to the student of Azerbaijan during

the inauguration of 7th Global Festival of Journalism Noida 2019.

"We are honored to present the scholarship of Asian Academy of Film And Television to Ambassador of Azerbaijan to handover to the deserving student from Azerbaijan on this auspicious day of International Day of Journalism to have better relation in media with their country," said Sandeep Marwah President of Marwah Studios.

"Indo Azerbaijan Film And Cultural Forum has been working in promoting and developing relation between two countries and so far has done commendable jobs to do so. This is an another gesture and we accept it with grace," said Ashraf Shikhaliyev Ambassador of Azerbaijan to India.

Many dignities and media students attended the event from different countries of the

world. 12th February is celebrated as the International Day of Journalism.

**Exhibition of Still Photography Inaugurated at 7th GFJN**

An exhibition of still photographs by the students of Asian School of Media Studies were displayed at Studio at 7th Global Festival of Journalism Noida 2019 inaugurated by the foreign dignities.

"Photographs are the everlasting memories, a still can speak 1000 words and don't forget that Still photography is the base of all visual media," said Dr. Sandeep Marwah President of Marwah Studios while introducing the need of still photography for a media students.

**See more Pics. & detail of programme on page 5 & 6**

# सम्पादकीय

## आक्रमता ही सही कदम

अभिनन्दन की घर वापसी ने भारत के एक सैनिक को भाषा, क्षेत्र, धर्म और जाति के तमाम संकुचित दायरे से ऊपर उठ कर एक नया शब्द, सम्बोधन और पहचान दी है, इस पहचान का नाम अभिनन्दन है। यह शब्द अब किसी भी भारतीय के लिए अनजान नहीं रह गया है, चाहे वो देश के



किसी कोने का रहने वाला, किसी भाषा का बोलने वाला, किसी धर्म का उपासक या फिर देश के किसी भी वर्ण का क्यों न हो। शुक्रवार 9 मार्च को देर रात अभिनन्दन की घर वापसी तो हुई देश के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के पंजाब राज्य के वाघा बॉर्डर से देश के इस क्षेत्र से लेकर उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिमी क्षेत्र तक सभी जगह जनता लगभग एक दिन पहले से अपने समर्पित योद्धा के सम्मान और स्वागत में जुटी हुई थी। एक कृतज्ञ राष्ट्र के लोग अपने रण बाँकुरे के स्वागत के लिए यह भी न करते तो क्या करते, यह तो उनको करना ही था और

खुशी की बात है की देश ने ऐसा किया भी।

इस पूरे घटनाक्रम का एक और पहलू बहुत महत्वपूर्ण है, क्या सीमा के इस पार बैठा कोई भी आम भारतीय यह कल्पना भी कर सकता है कि जब दुश्मन पाकिस्तान के वायुसेना के एक विमान का पीछा करते हुए अभिनन्दन का फाइटर विमान न चाहते हुए भी दुश्मन देश की सीमा में प्रवेश कर क्षतिग्रस्त हो गया था और अभिनन्दन घायल अवस्था में दुश्मन देश की जनता और सैनिकों के बीच जमीन पर पड़े थे, तब उनके मन में किस तरह के विचार आ रहे होंगे। ऐसा एक विडियो वायरल भी हुआ जिसमें पाकिस्तानी भीड़ का एक तबका इस भारतीय सैनिक को उनकी सीमा में घुसने का दुस्साहस करने की सजा देने के रूप में उनकी पिटाई भी कर रहा था लेकिन उस भीड़ में कुछ आवाजें ऐसी भी सुनाई दीं जो यह कहते हुए सुनी जा सकती हैं, कि इसे मारो मत, पुलिस को सौंप दो। ऐसे वक्त क्या अभिनन्दन ने यह सोचा भी होगा की वो तीन दिन के अंदर ही अपने देश वापस पहुँच जाएंगे। उनकी इतनी जल्दी वापसी की उम्मीद किसी ने नहीं की थी, इसी नाउम्मीदी में उनकी बहन ने अपने भाई की याद में एक बहुत ही भावुक कविता भी लिखी थी फेसबुक में पोस्ट की गयी इस मार्मिक कविता को पढ़ने के बाद ऐसा लगा कि उनके परिवार को इतनी जल्दी तो उनके वापस आने की उम्मीद कतई नहीं थी, कहीं न कहीं उनके परिजनों को ऐसा भी लग रहा होगा की शायद अभिनन्दन कभी भी वापस लौटें ही नहीं। कहना गलत नहीं होगा की इतिहास ने करवट बदली है तमाम नाउम्मीदी के बावजूद अभिनन्दन हमारे बीच वापस आए हैं। आमतौर पर मुम्बईया फिल्मों में दुश्मन देश के पकड़े गए सिपाही की कोई ऐसी तस्वीर मीडिया के हवाले से दिखाई जाती है जिसमें शत्रु देश के सैनिक उसके साथ बर्बर व्यवहार करते दिखाई देते हैं। अभिनन्दन के केस में तस्वीर का पहलू दूसरा है। पाकिस्तान के सैनिकों ने उन पर कोई अत्याचार न किया हो यह भी माना नहीं जा सकता लेकिन पाकिस्तान के सैनिकों के कब्जे वाली एक तस्वीर ऐसी भी है जिसमें वो चाय पीते हुए बात करते दिखाई दे रहे हैं यह तस्वीर भी उनके पाकिस्तान की सीमा में प्रवेश करने वाली घटना के तुरंत बाद ही जारी हो गयी थी गौरतलब है कि छब्बीस फरवरी को जब भारत की वायुसेना ने आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के पाकिस्तान स्थित ठिकानों पर हमला कर नष्ट कर दिया था उसके अगले ही दिन पाकिस्तान की वायुसेना ने भी बदले की कार्रवाई करते हुए भारतीय सीमा में प्रवेश करने की कोशिश की थी उसके जवाब में ही विंग कमांडर अभिनन्दन वर्तमान ने पाकिस्तान के एक लड़ाकू विमान का पीछा करते हुए पाक की सीमा का अतिक्रमण कर दिया था।

कहने को यह कहा जा सकता है कि मौजूदा पाकिस्तान आर्थिक रूप से कंगाली की कगार पर खड़ा है। आतंक के मामले में दुनिया के तमाम देश उससे किनारा कर चुके हैं और आज पाकिस्तान एकदम अलग-थलग पड़ चुका है, ऐसे में उसके पास अभिनन्दन की सकुशल स्वदेश वापसी के अलावा और कोई चारा ही नहीं था। अभिनन्दन की सकुशल वापसी को लेकर कहा तो यह भी जा रहा है कि पाकिस्तान बुरी तरह डरा और सहमा हुआ है और भारतीय वायुसेना के जांबाज सैनिक ने पाकिस्तान को दिन में ही तारे दिखा दिए। हम भारतीयों की एक बुरी आदत यह भी है कि हम जब किसी की तारीफ करना शुरू करते हैं तो यह भी देखने की कोशिश नहीं करते कि जब हम किसी की तारीफों के झूठे पुल बाँधने लगते हैं तब इस तरफ नजर तक दौड़ाना भी ठीक नहीं समझते कि उनकी इस बकवास से सामने वाले और उसके परिजनों को कितनी मानसिक पीड़ा हो रही होगी, जिस समय हमारे टीवी भौंपू अभिनन्दन, पाकिस्तान और इस पूरे हादसे को लेकर बेकार का नगाड़ा पीट रहे थे उस समय का माहौल भी बिलकुल ऐसा ही था। किसी ने सही कहा है, हर आदमी चाहता तो है देश में भगत सिंह पैदा हों लेकिन उसके घर में नहीं पड़ोसी के घर में।

# अब बदल रहा है अपना भारत

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

मोदी की पहल ने पाकिस्तान के रोंगटे खड़े कर दिए। मोदी ने जैसी पहल की, वैसी आज तक किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री ने नहीं की। पाकिस्तान को दूर-दूर तक यह आशंका भी नहीं थी कि भारत अचानक ऐसा हमला कर सकता है। हमारी वायु सेना के विंग कमांडर पायलट अभिनन्दन की सकुशल वापसी पर कौन भारतीय प्रसन्न नहीं होगा? यह हमारा वह बहादुर पायलट है, जिसने अपनी जान की परवाह नहीं की और जिसने पाकिस्तानी सीमा में घुसकर उसके एफ-16 युद्ध विमान को नष्ट कर दिया। अभिनन्दन को सुरक्षित भारत लौटाना पाकिस्तान की जिम्मेदारी थी। किसी भी राष्ट्र पर यह जिम्मेदारी आती है, वियना अभिसमय पर दस्तखत करने की वजह से। पाकिस्तान यों तो इस अंतरराष्ट्रीय कानून का हस्ताक्षरकर्ता है लेकिन उसने इस कानून को प्रायः तोड़कर ही इसका पालन किया है। उसने भारत के दर्जनों सैनिकों को पकड़े जाने के बाद भारत के हवाले करने के बदले सिर काटने का काम किया है जबकि इस अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन करते हुए भारत ने 1971 में 90 हजार पाकिस्तानी युद्धबंदियों को सुरक्षित लौटाया है।

अब पाकिस्तान ने अभिनन्दन को लौटाया है तो यह कोई बहुत बड़ा अजूबा नहीं है। 1999 में नवाज शरीफ ने हमारे पायलट नचिकेता को भी लौटाया था लेकिन इस बार प्रधानमंत्री इमरान खान ने अभिनन्दन को लौटाने के पहले सौदेबाजी करने की कोशिश की। वे चाहते थे कि अभिनन्दन को लौटाने के बदले भारत बातचीत शुरू करे लेकिन भारत सरकार ने स्पष्ट कर दिया कि वह इस सौदेबाजी में नहीं उलझेगी। इमरान चाहते तो सारा मामला काफी तूल पकड़ सकता था लेकिन उन्होंने मोदी के राजनीतिक चौके पर कूटनीतिक छक्का मार दिया। उन्होंने अभिनन्दन को बिना किसी शर्त छोड़ने की घोषणा कर दी। पाकिस्तानी संसद में इस घोषणा पर जिस तरह तालियां बजीं और पाकिस्तानी नेताओं के चेहरे पर जैसी मुस्कराहट फैल गई, उसी से आप अंदाज लगा सकते हैं कि पाकिस्तानी क्या समझ रहे थे। वे हारी हुई बाजी जीत लेने का अहसास करवा रहे थे।

इसमें शक नहीं कि इमरान के इस कूटनीतिक दांव को सारी दुनिया में सराहा जाएगा लेकिन यह न भूलें कि मोदी सरकार ने आतंकी अड्डों को उड़ाने की जो पहल की है, वह वैसी ही है, जैसी कि इस्राइल या अमेरिका करता है। वह पहल गैर-फौजी थी। याने भारतीय फौज ने न तो किसी पाकिस्तानी फौजी ठिकाने पर और न ही किसी शहर के नागरिकों पर हमला किया। उसका निशाना पाकिस्तान नहीं था। उसके आतंकी थे। लेकिन मोदी की इस पहल ने पाकिस्तान के रोंगटे खड़े कर दिए। मोदी ने जैसी पहल की, वैसी आज तक किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री ने

नहीं की।

पाकिस्तान को दूर-दूर तक यह आशंका भी नहीं थी कि भारत अचानक ऐसा हमला कर सकता है। ऐसा हमला भारत ने तब भी नहीं किया, जबकि उसके संसद पर आतंकी आक्रमण हुआ था या मुंबई में बेकसूर लोग आतंकी वारदात में मारे गए थे। इसीलिए पाकिस्तान के प्रवक्ता यह प्रचार कर रहे कि भारतीय जहाजों को सिर्फ तीन मिनट में ही उन्होंने मार भगाया। बाद में उन्होंने और उनके कहने पर अमेरिकी और ब्रिटिश मीडिया ने भी भारत के इस दावे को मनगढ़ंत बताया कि उसके जहाजों ने बालाकोट में 300 आतंकियों को मार गिराया है। पाकिस्तानी प्रवक्ता का कहना था कि बालाकोट में सिर्फ एक आदमी मारा गया। भारतीय जहाज हड़बड़ी में लौटते हुए अपने एक हजार किलो के बम जंगल में गिरा गए।

यदि सचमुच ऐसा ही होता तो सारे पाकिस्तान में शर्म-शर्म के नारे क्यों लग रहे थे? 'भारत से बदला लो' की चीख-चिल्लाहट क्यों हो रही थी? यदि भारत के दावे फर्जी थे तो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री दूसरे देशों के नेताओं को फोन क्यों कर रहे थे? अपनी फौज को आक्रामक मुद्रा में क्यों ला रहे थे? जाहिर है कि हमारे इस गैर-फौजी हमले ने पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए थे। भारत और पाकिस्तान, दोनों की तरफ से बढ़-चढ़कर दावे किए जा रहे थे। दोनों देशों की जनता असमंजस में पड़ी हुई थी। टीवी चैनलों पर दोनों देशों के सेवा-निवृत्त फौजी और पत्रकार लोग अपनी-अपनी जनता को भड़काने की कोशिश कर रहे थे। यदि भारत के इस हमले से पाकिस्तान का कोई नुकसान नहीं हुआ तो उसे इतने भड़काने की जरूरत क्या थी? लेकिन इमरान खान यदि बढ़-चढ़कर भाषण नहीं देते तो पाकिस्तान में उनकी छवि चूर-चूर हो जाती। यह तो मानना पड़ेगा कि इमरान के वक्तव्य बड़े सधे हुए थे और उनमें काफी संजीदगी भी थी। हर बार वे शांति की अपील कर रहे थे और पुलवामा-कांड से पाकिस्तान के जुड़े होने के प्रमाण मांग रहे थे लेकिन हम यह न भूलें कि इसके पीछे अंतरराष्ट्रीय जनमत भी बड़ा कारण था। पाकिस्तान के सभी सही और गलत कामों के दो बड़े समर्थक रहे हैं। अमेरिका और चीन। इस बार अमेरिका ने पाकिस्तान का बिल्कुल साथ नहीं दिया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पहले इशारा दे दिया था कि पाकिस्तान इस बार अकड़ेगा नहीं। चीन ने भी सुरक्षा परिषद के भारत-समर्थक बयान पर दस्तखत कर दिए थे, हालांकि उसका विदेश मंत्रालय पाकिस्तान-समर्थक बयान जारी करता रहा। अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन अब सुरक्षा परिषद में मसूदा अहजर और उसके संगठन जैश-ए-मुहम्मद को संयुक्त राष्ट्र की आतंकवादी काली सूची में डालने का

प्रस्ताव ला रहे हैं। दूसरे शब्दों में असली मुद्दा यह नहीं है कि हमने पाकिस्तान के कितने जहाज गिराए और पाकिस्तान ने हमारे कितने हेलिकॉप्टर गिराए। असली मुद्दा है- आतंकवाद का। पाकिस्तान को अब यह सोचने के लिए मजबूर होना पड़ेगा कि आतंकवाद को वह भारत के विरुद्ध एक हथियार की तरह इस्तेमाल करना बंद करेगा या नहीं? इस हमले ने पाकिस्तान और दुनिया को यह बता दिया है कि भारत परमाणु ब्लैकमेल से डरने वाला नहीं है। यह शायद दुनिया की ऐसी पहली घटना है जबकि एक परमाणु सम्पन्न राष्ट्र ने एक दूसरे परमाणु संपन्न राष्ट्र के आतंकी ठिकानों पर हमला किया है।

इमरान खान के वार्ता के प्रस्ताव को भारत ठुकराए, यह ठीक नहीं है लेकिन इमरान पहले यह बताए कि वे बात किस मुद्दे पर करना चाहते हैं? चार-पांच दिन पहले मैंने कुछ पाकिस्तानी टीवी चैनलों पर बोलते हुए कहा था कि इमरान को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर सीधे बात करना चाहिए और उन्हें भरोसा दिलाना चाहिए कि भारत और पाक मिलकर दहशतगर्दी के खिलाफ साझा लड़ाई लड़ेंगे। मुझे खुशी है कि इमरान ने मोदी को फोन भी किया लेकिन शांति की हवाई बात करने से क्या फायदा है? अभिनन्दन को छोड़ दिया, यह अच्छा किया लेकिन क्या यही असली मुद्दा रहा है, दोनों देशों के बीच! उनकी शांति की अपील में कितनी सच्चाई है, यह दिखाने के लिए भी तो इमरान को कोई ठोस कदम उठाना था। यदि वे दो-चार आतंकवादी सरगनाओं को पकड़ कर तुरंत अंदर कर देते या भारत को सौंप देते तो माना जाता कि उन्होंने कुछ ठोस कदम उठाए हैं।

वास्तव में आतंकवाद के कारण पाकिस्तान की परेशानी भारत से कहीं ज्यादा है। सारी दुनिया में पाकिस्तान अपने आतंकवाद के कारण बदनाम हो चुका है। अंत. रराष्ट्रीय वित्तीय संगठन ने भी उसे काली सूची में डालने की चेतावनी दे दी है।

पाकिस्तानी जनता आतंकी गति. विधियों के कारण बहुत त्रस्त है। दुनिया में पाकिस्तान अब आतंकवाद के कारण 'गुंडा राज्य' (रोग स्टेट) के नाम से जाना जाने लगा है। इमरान खान यदि 'नया पाकिस्तान' बनाना चाहते हैं तो उन्हें फौज को मनाना पड़ेगा कि वह आतंकियों का इस्तेमाल करना बंद करे। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने अपनी संक्षिप्त और सीमित सैन्य कार्रवाई से अपनी-अपनी जनता के सामने अपनी छवि सुरक्षित कर ली है लेकिन अब यह सही समय है, जबकि वे बातचीत के द्वार खोलें और आतंकवाद को इतिहास की कूड़ेदान के हवाले कर दें। अगर सार्थक बात. चीत होगी तो कश्मीर समेत सभी समस्याओं का शांतिपूर्ण हल आसानी से निकल सकता है।

## Mourning India should ask USA to reorganise UN based on Denuclearisation and Secularism

**Hem Raj Jain**

After February 14 Pulwama suicide attack (in which over 40 persons of Indian Security Forces were killed by Pak sponsored militant Jihadis), there was almost a consensus in India that this time diplomatic, economic, etc. solutions would not work and military solution is the only option for 'teaching Pakistan a lesson' a euphemism for solution to gory and chronic Kashmir problem as per India. However, after February 28 press conference of three services of Indian military, it is clear that military part is now over without giving a military response to February 27 Pak attack on a military installation of India (God only knows under whose pressure whether the USA or Saudi Arabia or some other). Hence, despite the drama of putting up a brave face by India by saying that India after 1971 has first time crossed LoC and IAF Planes have gone to even Pak mainland for February 26 strike at Balakot, there is no result on the ground. This is evident from the fact that all the terrorist leaders are still free in Pakistan and PM Imran Khan is still talking about nukes

when he said that neither he nor PM Modi would be able to stop the implications of nuclear flare-up and many Pakistani leaders including a Cabinet Minister Sheikh Rasheed of Pak Government is still talking in Pak National Assembly about Islamic-necessity of martyrdom by Jihadis against India (as given at [https://www.youtube.com/watch?v=P\\_Bd03jRrWQ](https://www.youtube.com/watch?v=P_Bd03jRrWQ)), hence India is understandably in mourning. However, everything is not yet lost and there is hope if India tries to eliminate the terrorism (killing of civilians) by Jihadis from SAARC region by realizing Secular Federation of SAARC (starting from Secular Federation of Indo-Pak) (as mentioned at <http://www.pakistanchristian-post.com/opinion-details/3266>). For this to happen, India should understand that (i) Killing security forces is act of war and not terrorism (ii) Only killing non-combatants (civilians) is terrorism (iii) Rest of world is unreasonable if expects that Pakistan should not to use militant Jihadis for killing security forces of India in Kashmir with local support (an act of war by Pakistan for

militarily snatching Indian side of J&K from India).

India should also stop calling attack at Pulwama, Uri, Pathankot, etc. (where security forces were attacked and killed) as terrorist attacks rather these should be called acts of war by Pakistan through Pak sponsored militants. India should also stop calling Balakot strike as non-military and pre-emptive strike rather it should be called military and retaliatory strike. Moreover, instead of indulging in ineffective (and without any end-game) Balakot surgical strike 2 etc, India should mobilise its armed forces (army and navy with air support) on Pak border and should demand PoJK and Jihadis like Hafiz Sayeed (for terrorist attack of killing civilians in India and not for act of war for killing security forces of India) under military ultimatum and then let world community decide.

India should simultaneously ask from world community (led by the leader of free world, the USA) to go for re-organisation/replacement of UN based on complete denuclearization (where India will also hand-over its nukes to this new UN the members of which will be

only denuclearised and the denuclearising SECULAR States). In this new UN there should be no veto power to any member rather should be voting rights as per contribution of men (including martial) material (including military) and money and the record of human rights of the member country. India should ask this in the interest of nuclear-threat-free-world in view of also the failure of this week's denuclearisation talks between the USA and North Korea. India should also demand 'International Political Parties' (IPPs) registered at this new UN and Mandatory Protocol MP-1 of ICCPR at this new UN in place of existing Optional Protocol OP-1 in order to make this new UN success in the interest of bringing peace, prosperity, and happiness to the entire mankind. Otherwise, one more major (in a so-called minor incidence 5 security forces of India have already been killed on March 1 also by militant Jihadis in Kashmir along with increased shelling at LoC) suicide or other attack by militant Jihadis in Kashmir (who are not entirely under Pak military but under militant-Islam too) will

render everything (whatever is being done by India) meaningless and absurd. It is hoped that India will understand that a country of 1.32 billion people with growing economic power cannot (in this age of globalisation) remain in peace unless it contributes commensurately for the proper functioning of global order. For this to happen India should demand the reorganization/replacement of UN based on denuclearization along with transition from Theocratic States to Secular States of its member countries without which regional and global peace is impossible [given the fact that Saudi Arabia (SaAr, the sponsor of 41 Sunni-NATO commanded by former Pak Army Chief Raheel Sharif) is spreading Wahabi / Jihadi militant ideology all across the world on the strength of its immense petrodollars which has empowered SaAr to the extent that it is even getting away with the brutal murder of its citizen & Washington Post journalist Jamal Khashoggi (in its Consulate at a NATO country Turkey) which SaAr admitted without explaining as to what happened to the dismembered body of Khashoggi].

## Stop scoring political brownie points on Jawans' sacrifice

**Vaidehi**

Modi has played his last card for the 2019 elections; people of north and central India are being deeply absorbed in blind nationalism since Pulwama and Abhinandan incidences happened. Somewhere, the senior BJP leaders like Yeddyurappa have already confessed it. During the 1992 elections, someone asked PV Narasimha Rao, the then Prime Minister of India, how will you win over BJP? Narasimha Rao smiled and took a deep breath and said, "Don't you understand the politics of BJP? BJP politicians do politics of symbolism? This time BJP campaigner is Lord Rama, You can win above everything but how will you win over Rama?"

Correctly symbolising the politics is mastery of BJP". I strongly resonate to PV Narasimha Rao; those days I was a school kid to understand these politics but I have witnessed that bizarre craze in my house where everyone was up to donating something for the Ram Temple, all were attending mass prayers, and they were totally for the BJP, in anticipation of having Lord Rama Temple in Ayodhya. Till today, many riots had happened, people got divided

into religious lines, but Lord Rama is in the transit camp. BJP has totally ignored this subject and so the people also have moved out of it. Rama is no longer working as one cannot bake cookies with burned coils. Now, in 2019, PM Modi has placed a big symbol on election front and that is none other than the Indian Armed forces. If you ask questions, then the army pride would be brought in front of you and you will be immediately tagged as an anti-national for questioning the government on Army! You are not supposed to ask questions to the Armed forces and especially the government because only the Army and PM Modi supporters are real nationalists but no matter how much you love your country or pay tax for your army men, no matter how much you respect your armed forces, one question will put you in integrity crisis! So, if you cannot win above Rama, you cannot win over Indian Armed forces as they are highly regarded entity; unfortunately, the politics is being played on them but neither are they themselves realising, nor the public.

You will be hammered with adjectives like Proud, Chivalry, Country, Patriotism

and so on; in such trouncing, you will never dare to pose a question to the establishment and the government that is supposed to be one of the contesting parties in the 2019 elections. Some of the BJP supporters have become Zombies. They follow blindly and if you dare to pose questions, then you need to be prepared to get haunted to death by all means. Today's democracy is living in symbolism. BJP using Surgical Strikes, Uri Attack, Pulwama, and Abhinandan Varthaman for political gains is lowering the morale of the armed forces. The surgical strike was conducted by the army in Pakistan Occupied Kashmir (PoK) in 2016 in response to the Uri terror attack where 19 jawans were martyred. In 2019 Pulwama terror attack, a convoy of vehicles carrying security personnel on the Jammu-Srinagar National Highway was attacked by a vehicle-borne suicide bomber at Lethipora (near Awantipora). The attack resulted in the deaths of more than 40 Central Reserve Police Force (CRPF) personnel and the attacker. The responsibility for the attack was claimed by the Pakistan-based Islamist militant group Jaish-e-Mohammed. The

attacker was Adil Ahmad Dar, a local from Indian-administered Kashmir and a member of Jaish-e-Mohammed. India blamed Pakistan for the attack. Pakistan condemned the attack and denied any connection to it by asking to provide proofs of its involvement. On February 26, 12 Mirage 2000 jets of the Indian Air Force crossed the Line of Control and dropped bombs into Balakot, Pakistan. India claimed that it attacked a Jaish-e-Mohammed training camp and killed a large number of terrorists, reported to be between 300 and 350.

Pakistan claimed that they quickly scrambled jets to intercept the IAF jets, which dropped their payloads to quickly return over the Line of Control. Many Indians questioned the authenticity of this strike. All those posed questions, were tagged as anti-national but there was no answer from the government or the Armed forces; however, BJP took every credit to their advantage. It is not about morals and the right and the wrongs. In a country like India, where Army plays an important role in everyday life considering their contribution to fighting terrorism, we should support them in all ways. They are the people

who lay down their lives to protect us, it might be their job or they have joined it intentionally but how many of us would die for a certain amount of money. Army men do not give their lives for money or fame but for the nation and the pride that comes with it. Unfortunately, BJP is a party which has done Masters in taking credits. Since 2014, they have taken credit for everything good that has happened with India and never accepted their fault for any disaster they have created during their tenure. Such incidences and our Armed forces are not of taking credit for political gains. The matter is not about just BJP using it for political gains but the whole issue is that the politics have twisted these crucial factors.

I believe that such sacrifice of army and security personnel must be highlighted, but not for the benefit of any political party and for the interest of the country. There are very few news channels which really concentrate on such news but for others, it is the game of TRP. Indian Soldiers deserve respect and honour. The Media these days acts as if surgical strikes weren't carried out prior to 2014.

## MEDIA OF BOTH COUNTRIES MAKING WRONG NOISES

**Sushil Kutty**

Pregnant in the din over demands for proof of kill and statements that patriots shouldn't ask for proof, whether or not targets were struck or not trees were uprooted, is the conduct of the media both sides of the border. Sections of the Indian television news media have turned 'warmongers', studio warriors demanding Pakistan be taught a lesson, giving fodder for their Pakistani counterparts to pit India's militaristic intentions with a 'peaceful Pakistan' narrative.

The "Republic" of India regularly lines up "anti-nationals" on prime-time television and asks them to shout 'Jai Hind' and "Bharat Mata Ki Jai"; and woe betide to the one who doesn't. A rival channel is not far behind in being establishment-friendly albeit it doesn't go to the extent of asking for proof of patriotism from panelists representing opposition parties. Intemperate statements by politicians feed the frenzy and it's a daily evening diet of hyper-nationalism fed to viewers. That is the Indian media, which have also been charged

with peddling "fake news." But it's their Pakistani counterparts, which are getting away with murder. For, lost in Pakistani obfuscation is the fate of the F-16 pilot who was ejected from his fatally-hit aircraft and then has not been heard of since except in Social Media.

Pakistan's DGISPR Maj. Gen Ghafoor wrongly, some would say "conveniently", identified him as "a second IAF pilot" in Pakistan custody. "The other one is in the Central Command Hospital," the Maj. Gen. told Pakistan media February 27 to cries of 'Pakistan Zindabad' from the journalists.

It was only after Indian Foreign Secretary Vijay Keshav Gokhale clarified that India "lost a Mig-21 Bison" and an "IAF pilot is missing" did Maj. Gen Ghafoor correct himself and let the world know that only "one IAF pilot" was in Pakistan's custody. But did he say anything about the pilot in "Central Command Hospital"? No, that he did not, and why not?

Neither did the Pakistan media ask the question, call out their DGISPR's faux pas.

The Pakistan Army and Pakistan media to date continue to say that "two IAF aircraft" were shot down by Pakistani jets on February 27. Pakistani media also chose not to question Pakistan about the use of F-16s in the counter-strike against Indian military installations.

Sadly, Indian media, except for a recently launched weekly, also did not ask the question: "Who was the second IAF pilot?" The answer was provided in Social Media by Pakistanis. The "second IAF pilot" was in fact a "PAF pilot", Wing Commander Shabzaz-ud-Din, who on ejecting from his stricken F-16 landed in POK and was brutally beaten up by civilians, who mistook him for an IAF pilot. Wing Commander Abhinandan escaped a similar fate because of his "gun" and because Pak Army soldiers reached him in time, but not Wing Commander Shabzaz-ud-Din. What happened next? Wing Commander Shabzaz-ud-Din is taken to hospital and DGISPR Maj. Gen. Ghafoor is told that a "second IAF pilot" is in Pakistan Army's custody. The Maj. Gen. jumps the gun

and proclaims to the Pakistani media that a "second captured IAF pilot is in hospital."

Wing Commander Shabzaz-ud-Din is an unsung casualty of war, whose misfortune is so great that he isn't even named by the Pakistan Armed Forces or his valour celebrated by his countrymen. Two Wing Commanders of rival air forces. One is a "hero"; the other is not even recognized as a "martyr." Nothing extraordinary there, Pakistan has never shirked from accepting the deaths of its soldiers in wars if it suits Pakistan's narrative.

But it's the role of the Pakistani media in perpetuating the lie that has not been called out. Pakistani media, collectively and willingly, chose not to question the Pakistan Army. Pakistan television channels and print media alike whitewashed Wing Commander Shabzaz-ud-Din's martyrdom. None of the Indian media-bashing Pakistan media felt it incumbent to do justice to Wing Commander Shabzaz-ud-Din, one of their own. That probably is the difference between Pakistan and Indian media.

While most Indian media take seriously the "independent media" tag, their Pakistani counterparts steadfastly toe the Pakistani establishment line, and Pakistan's "national interest." The few times, Pakistani journalists have exposed Pakistan's lies, they have been hounded and intimidated. It happened to Cyril Almeida of Dawn newspaper and Taha Siddiqui, who reported from Pakistan for WION. Siddiqui was almost "disappeared" by Pakistan's ISI and is now an exile in France. Almeida continues to be on Pakistan's passport watch list and is "guilty" of getting Nawaz Sharif to admit that Pakistan orchestrated 26/11. But it's the international media, markedly Pakistan-friendly, which are being questioned, media like the New York Times and CNN, for asking probing questions on how many JeM terrorists were killed in the Balakote strikes and if terror targets were in fact hit even as Pakistani media called for the Nobel for Imran Khan and sections of Indian media sold Narendra Modi to the Indian voter.

(IPA Service)

## First-ever Euro Souvenir Banknotes launched to celebrate Gandhi's 150th birth year

New Delhi : Mahatma Gandhi's fans across the world will have a unique opportunity to possess the first-ever Euro

ing and famous incidents from Gandhi's personal and political life, paying rich tribute to the legendary figure, who

of Gandhi in 1969 to celebrate his 100th birth anniversary. These notes were for public use as well". Ramkumar, a collector himself, also has his name recorded in the Limca Book of Records as the person having the unique collection of commemorative banknotes -45- issued for Mahatma Gandhi's centenary in 1969. He has all denominations and all prefixes- 18 Rs 1 notes, five Rs 2 notes, seven Rs 5 notes, 13 Rs 10 notes and two Rs 100 notes.



Souvenir Indian notes that celebrate 150th year of the leader's birth anniversary. The limited-edition Zero Euro 12-notes commemorative series is being unveiled by UAE-based specialized numismatics company, Numisbing, with just 5000 notes of each design. The first two notes of the series are launching now and rest sequentially until Oct 2, 2019. The notes designed by Dubai based Indian artist, Akbar Saheb, the sole illustrator of Indian Prime Minister Narendra Modi's book, Mann Ki Baat, are based on interest-

remains a beacon for many across the world. Explaining the background of the initiative, Ramkumar, Founder of Numisbing and President of International Bank Note Society, Dubai Chapter said: "Besides the fact that these commemorative notes have a huge shelf value, the bigger reason for the initiative was to bring Mahatma Gandhi back to life using incidents that are more than just history lessons. Only once before a similar initiative has been taken when the Indian government issued commemorative notes with the image

## Prayagraj Kumbh Mela 2019 makes it to the Guinness World Records

Delhi : Prayagraj Kumbh Mela 2019 has been placed in the Guinness World Records in three sectors. It includes largest traffic and crowd management plan, the biggest painting exercise of public sites under paint my city scheme and biggest sanitation and waste disposal mechanism. A three member team from Guinness World Records visited the Prayagraj for this purpose. Exercise at large scale were done before the

team members for three days from February 28 to March 3. Around 503 shuttle buses were pressed into service in one go for the team on February 28 on the highway. Several people participated in painting exercise on March 1 and 10 thousand workers engaged in cleaning at Prayagraj Kumbh performing their duties all together. Only a single bathing festival of Mahashivratri of the six main bathing festivals remains.

## An evening high on Emotions, Act, Dance & Samvaad...

New Delhi ; It was a speechless evening of Samvaad! Yes, Speechless! A dialogue between like-minded classical dance forms at an evening hosted by Centre for Mohiniyattam, led by Eminent Mohiniyattam veteran Padmashri Guru Bharati Shivaji. The evening featured scintillating dance presentations of Mohiniyattam and other like-minded classical dance forms, namely Odissi, Sattriya, Manipuri and Mayurbhanj Chhau.

The performances were given by the Senior Disciples of Guru Bharati Shivaji including Vinaya Narayanan, Manjula Murthy, Vani Bhalla Pahwa & Momm Ganguly (all



Mohiniyattam) and well-known performers Anwesa Mahanta (Sattriya), Kavita Dwibedi (Odissi), Rakesh Sai Babu (Chhau) & Bimbavati Devi (Manipuri). Samvaad expressed how the styles, in spite of their well delineated vocabulary, complement each other beautifully and can come together to weave a

poetic tapestry of grace and rasa. The evening kicked off with formal lamp lighting.

The performance commenced with samvaad of Mohiniyattam by Vinaya Narayanan and Sattriya by Anwesa Mahanta. It began with Sattriya. Graceful, lyrical and soft-footed in nature.



“Still photographs have played the best role in persevering history and in highlighting best of the information to the whole World. In today's age no one can ignore still photography,” said Muhamed Cengic a professional photographer and Ambassador of Bosnia And Herzegovina to India while inaugurating the exhibition.

“We are now used to our still cameras, still photography is now become next to our nature from our habit. We must use camera for preserving best of the occasions,” added H.E. Ashraf Shikhaliyev Ambassador of Azerbaijan to India.

“The collection of pictures of different genre has added a lot to the exhibition. These hundred photographs are leaving new energy to this studio,” said Roman Masric Deputy Head of the Mission, Embassy of Czech Republic.

“The exhibition has induced me to start preparing for the exhibition of photographs from Singapore. These photographs teaching us a lot from different actions,” said P. Murugaesh Counselor High Commission of Republic of Singapore.

K.G.Suresh Director General Indian Institute of Mass Communication, Neeraj Thakur of Press Council of India, Sakshi Joshi of News 24 and many national and international delegates were also present there.

**A seminar on Today's Journalism Scenario at 7th GFJN**

After the grand opening of 7th Global Festival of Journalism Noida 2019 a seminar was organized to discuss and talk about today's Journalism Scenario in India in different mediums of media. “We have seen drastic changes since we have been in media

for 33 years. ‘The change is the only thing which is constant’, so we have been adjusting our self to these changes. But a sudden and sweeping changes in media in last ten years brought revolution in the industry,” said Dr. Sandeep Marwah initiating the discussion on the subject.

R.K.Singh former Engineer in Chief Doordarshan, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India narrated some beautiful instances from his last experiences. Sanjay Singh Secretary Press Club of India and Political Editor News India also shared his experiences from journalism field.

AAFTian Rashid Hashmi now Editor in Chief FM TV News, Ajay Shukla Editor in Chief ITV Network and Vipin Gaur Editor Country And Politics and Secretary of News Paper Association of India spoke on the subject.

During the session a poster on Ganesh Shankar Vidyarthi was released to mark respect to truthful and Patriotic Journalism. The first copy of news bulletin of day One, published and printed by the students of Asian School of Media Studies, was also released. Later Dr. Sandeep Marwah honored all the speakers with life membership of IJC-International Journalism Centre of Marwah Studios. Albeena Abbas conducted the event and Col. Pradeep Gupta paid vote of thanks.

**Exhibition of News Papers Inaugurated on the Second Day of 7th GFJN**

Exhibitions are always been part of all festivals. They are integrated section of all the Global Festivals

designed by the international maestro Sandeep Marwah at Noida Film City the ground place of Marwah Studios and AAFT.

“We have many departments working at the same time. Print, Radio, Television, Cinema, New Media, Audio, Video, Publication, Research, Design, Still Photography are some of them. This is the presentation of Mass Communication And Journalism Students who have designed the cover page of News Papers,” explained Dr. Sandeep Marwah at the exhibition.

“The students are always very talented, but they need proper guidance to come up to the international standard. I appreciate the two scholarships which were presented by AAFT to Ghana Students have done wonders to their vision and caliber here,” said H.E. Michael A. A. Oquaye High Commissioner of Ghana to India while lighting the ceremonial lamp and thanking Indo Ghana Film And Cultural Forum of ICMEI.

“This is my third time in 30 days. A Marwah studio has a lot to offer to the World of Art and Culture. No one can compare to them in films, television and media presentation. I have never been to any Global Festival of Journalism ever in my life before,” K.L.Ganju Consulate General Embassy of Comoros in India appreciating the formation of Indo Comoros Film And Cultural Forum.

Indo Panama Film And Cultural Forum is going to take part in every event designed by ICMEI. WE are here to promote our relations,” added Ricardo A Berna Charge d' Affaires Embassy of Panama in India.

Kulwinder Singh Kang Director All

India Radio Ministry of Information And Broadcasting Government of India, Sayeed Ansari Deputy Editor and Anchor Aaj Tak, Paul Song Director International Youth Fellowship South Korea, Onuel Uka President Nigerian Students Association in India were also present there.

**World Radio Day Celebrated at 7th Global Festival of Journalism**

The second day of 7th Global Festival of Journalism Noida 2019 attracted many more countries and their heads in India to be part of this great gala international event.

United Nation has already declared 13th February as the World Radio Day to emphasis the importance of one of the oldest medium of media. A poster was launched by all the dignities to mark respect to World Radio Day.

“We are lucky to have our own Radio Station and we are well versed with the pros and cons of the station. One million people of this belt is directly associated with us through radio. Now radio can be heard all over the World with radionoida.fm through net. The importance of Global Festival of Journalism rises with radio day falls within these three dates,” said Dr. Sandeep Marwah explaining the importance of GFJN.

“I congratulate all of you on this World Radio Day. Celebration journalism means celebration of freedom. It is very important to look for your rights in freedom society but also you should worried for your duties towards your country and society,” said H.E. Michael A A Oquaye High Commissioner of Ghana to India.





Coming Soon

# 1st Global Strategy and Leadership Award



International Chamber of  
Professional  
Education & Industry



Newspaper Association  
of India



Centre for Strategy  
and Leadership



Newstree  
Media Broadcasting  
Pvt. Ltd.

For



DOCTORS



LAWYERS



EDUCATIONISTS



JOURNALIST



& OTHER  
PROFESSIONALS

In March 2019

## Skill development should become a national mission: Vice President

Delhi : The Vice President of India, Shri M. Venkaiah Naidu has said that skill development should become a national mission. He lauded the valor, courage and commitment of Wing Commander, Abhinandan Varthaman and said that he has made the nation proud with his bravery and professional integrity in the face of adversity. He called Shri Abhinandan and his family who have been serving the nation, a shining example in the service of the nation as he asked the younger generation to draw inspiration from him. Addressing the gathering after laying foundation stone for the construction of Kaushal Bhawan, here today, Shri Naidu stressed up on the need to work as team India to build a



stronger India, a more developed India, an India that was capable of defending itself against hostile forces and disruptive designs. The world and especially South East Asia has numerous problems like poverty, illiteracy, unemployment and low employable skills. We

should wage a war against these, he added. Calling youth the agents for transformation, the Vice President asked the youth to upgrade their skill sets by using the opportunities made available by the government such as Skill India, Digital India, Pradhan Mantri

Kaushal Vikas Yojna and others that were aimed at empowering youth to match the needs of the 21st century job market. The Vice President called up on the Private sector to step in supporting government's efforts skill the youth of India, especially the ones living in rural areas. Expressing concern over the rising urban-rural divide, Shri Naidu wanted united efforts by all agencies including the private sector to create healthcare, rural employment, skill training facilities at rural areas at par with the urban areas.

Quoting Maharma Gandhi's Nai Talim, the Vice President stressed that youth and children should not just be trained to acquire skills but should be taught to respect human labor and social harmony and tolerance.

One must learn to respect every job, he added. Shri Naidu said that training the youth and children on rural crafts by way of vocational training and empowering them to stand on their own should pave the way for Gram Swaraj and create the possibility of large-scale self-employment in rural and urban areas.

Date of Posting 10/11th of Every Month

Publishing on 10th of every month

RNI No. 62500/95

REGD. No. DL (E)-01/5149/2018-2020

LICENCE TO POST WITHOUT

PRE-PAYMENT No. U(C)223/2018-2020

To,

If undelivered, Please return to:

न्यूज पेपर्स एसोसिएशन

ऑफ इंडिया

POST BOX 9235, NEW DELHI-110092

यदि आप लेख, रचना, संपाचार, विचार प्रेषित करना चाहते हैं तो आप अपने अप्रकाशित लेख निम्न पते पर भेजें।

आपको NAI का यह अंक कैसा लगा, इस बारे में अपने सुझाव हमें निम्न पते पर भेजें।

एन. ए. आई.

A-213, Shanti Gopal Chambers, 11th Floor,  
Shakarpur, Delhi-110092, Ph.: 011-22058133

### Editorial Board


Founder	Late Dr. M. R. Gaur
Editor Publisher-Printer	Vipin Gaur
Counsellant Editor:	Dr. Smita Mishra
Managing Editor:	Dilip Kumar K. R. Arun
Legal Advisors:	Nikhata Anjum Malik
Advocate Delhi Highcourt	Rajesh Sharma Adv. P. Yadav
Office Secretary	Pawan Pant

### - Bureau Chief -

Guwahati:	Mr. Monojit Singha
Mumbai:	Mr. Dinesh K. Mishra
Bangalore:	Mr. Pramesh Jain
Jaipur :	Mr. Bhanwar Singh Ranawal
Chennai:	Mr. Vinod Lalwani
M.P. & C.G.	Mr. O. P. Jain
Kerala	Mr. Suvarna Kumar
Goa	Dr. Vivek Gaitonde



The Union Minister for Textiles, Smt. Smriti Irani inaugurating the Refurbished Handloom Haat, in New Delhi on March 05, 2019. The Minister of State for Textiles, Shri Ajay Tamta and the Secretary, Ministry of Textiles, Shri Raghendra Singh are also seen



**NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA**

Support

**SAVE THE ONE HORNED RHINO**

**AND STOP THE POACHERS**

